वैदिक यज्ञ स्वरूप विमर्श

(आध्यात्मिक, आधिदैविक एवं आधिभौतिक व्याख्याओं के सन्दर्भ में)

संगोष्ठी विवरण

श्री शंकर शिक्षायतन एवं भारतीय पुरातत्त्व परिषद्, दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में "वैदिकयज्ञस्वरूप विमर्श (आध्यात्मिक, आधिदैविक एवं आधिभौतिक व्याख्याओं के सन्दर्भ में)" विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी २९ अप्रैल २०१७ को भारतीय पुरातत्त्व परिषद्, के सभागार में सम्पन्न हुई। इस संगोष्ठी में विविध स्थानों से वाराणसी, पश्चिम बंगाल, कुरुक्षेत्र, गुजरात, दिल्ली, हरिद्वार से प्रतिभागी विद्वान् ने भाग ग्रहण किया।

भारतीय परम्परा में यज्ञ एक आधारभूत स्तम्भ है । यह मानव जीवन में निरन्तर चलता रहता है। वेदों, ब्राह्मणग्रन्थों, आरण्यकों श्रौतसूत्रों एवं स्मृतियों में यज्ञ का विस्तार से वर्णन मिलता है। यज्ञ का सामान्य अर्थ क्रिया है। सम्पूर्ण सृष्टि क्रियारूप ही है। अत एव यह सृष्टि यज्ञस्वरूपात्मक है। यज्ञ तीन प्रकार के हैं- पाकयज्ञ, सोमयज्ञ और हविर्यज्ञ। पाकयज्ञ में अन्न से, सोमयज्ञ में सोम एवं हविर्यज्ञ में घृत से आहुति दी जाती है।

पण्डित मधुसूदन ओझा ने अपने ग्रन्थों में प्राकृतिक यज्ञों का वर्णन दार्शनिक सन्दर्भों में किया है तथा द्रव्ययज्ञ के लिये 'यज्ञसरस्वती' और 'यज्ञमधुसूदन' ग्रन्थों का प्रणयन किया है। शुक्ल यजुःसंहिता में मन्त्रों का वही क्रम है जिस क्रम से उनका यज्ञों में प्रयोग होता है । अतः 'यज्ञसरस्वती' ग्रन्थ यजुः संहिता का भाष्य कहा जा सकता है।

श्री शंकर शिक्षायतन द्वारा 'यज्ञसरस्वती' को आधार बनाकर 'वैदिकयज्ञस्वरूप विमर्श (आध्यात्मिक, आधिभौतिक एवं आध्यात्मिक व्याख्याओं के सन्दर्भ में) विषय' नामक संगोष्ठी में यज्ञीय अवधारणाओं को व्याख्यायित करने वाले अनेक शोधपत्र प्रस्तुत हुए ।

उद्घाटन सत्र में विषय प्रवर्तन डॉ. सन्तोष कुमार शुक्ल ने किया। उन्होंने पण्डित मधुसूदन ओझा विरचित 'यज्ञसरस्वती' ग्रन्थ के महत्त्व को एवं किस प्रकार 'यज्ञो वै विष्णुः' की व्याख्या भागवत आदि पुराणों मे की गयी है, यह बताया । मुख्य वक्ता आचार्य ज्वलन्त कुमार शास्त्री ने यज्ञ करने से दैनन्दिनि जीवन में मिलने वाले फल को स्पष्ट किया। मुख्य अतिथि प्रो. शशिप्रभा कुमार ने यज्ञीय व्यवस्था से सामान्य जीवन में होने वाले लाभ को स्पष्ट किय। अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. हरि प्रसाद अधिकारी ने पुराणों में वर्णित यज्ञों का प्रतिपादन किया।

प्रथमसत्र के मुख्य वक्ता डॉ. रामानुज उपाध्याय सोमयाग में सोमपान की प्राच्य-पाश्चात्य दृष्टि से मीमांसा की । उन्होंने अपने पत्र में कहा है कि किस प्रकार वर्तमान समय में मदिरापान को सोमपान से जोड़ा जा रहा है। जो सर्वथा भ्रान्त है । डॉ. रामचन्द्र ने चातुर्मास्ययाग : स्वरूप, वैज्ञानिकता एवं प्रासंगिकता विषय पर बोलते हुए कहा कि भारतीत परम्परा में यज्ञीय पात्रों

का वर्णन दैनिक जीवन में उपयोग करने वाले पात्रों के नाम से जोडा गया है। डॉ. रामचन्द्र शर्मा ने सनातनधर्म का मूलस्वरूप : यज्ञ विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। जिसमें उन्होंने कहा कि यज्ञ ही धर्मों का मूल है। डॉ. सुन्दर नारायण झा ने भारतीय सभ्यता एवं संस्कारों का आधार : श्रौतयज्ञ विषय पर अपना व्याख्यान दिया। डॉ. दयाल सिंह पंवार ने पितृपिण्ड यज्ञ का वैशिष्ट्य विषय पर विशद विवेचन किया । जिसमें उन्होंने यज्ञ करते समय विघ्न आते हैं जो असुरों का प्रतीक है। डॉ. सुमन कुमार झा ने कालिदास के साहित्य में यज्ञविधान विषय पर शोधपत्र का वाचन किया। मुख्य अतिथि डॉ. भारतेन्दु पाण्डेय ने गीता के उद्धरणों को देते हुए यज्ञ विषय पर अपना मन्तव्य दिया। सत्र के अध्यक्ष प्रो. राम नाथ झा ने 'न मम इदम्' एवं 'मम इदम्' को आधर पर यज्ञ का वर्णन किया। सत्र का संचलन प्रो. रामराज उपाध्याय ने किया।

द्वितीयसत्र के मुख्य वक्ता प्रो. सुधीर कुमार ने यज्ञ में प्रयोग होने वाली सामग्री आदि का महत्त्व प्रतिपादन किया। मुख्य अतिथि प्रो. निरञ्जन पटेल शुनःशेप आख्यान को आधार बना कर यज्ञ को स्पष्ट किया। डॉ. प्रभाकर प्रसाद ने यज्ञ में तन्त्र और प्रसंग का विचार विषय पर अपना शोधपत्र पढ़ा ।

ऋषिसम्मान समारोह के मुख्य अतिथि प्रो. कपिल कपूर ने यज्ञ एवं भक्ति आन्दोलन के विषय में प्रकाश डाला। डॉ. सन्तोष कुमार शुक्ल ने कहा कि श्री शंकर शिक्षायतन के 'ऋषिसम्मान' की परम्परा एवं क्षेत्र के विषय में बताया। सम्माननीय आचार्य पण्डित गोविन्द प्रसाद शर्मा गोविन्दाचार्य को उत्तरीय वस्त्र, फल, प्रमाणपत्र आदि से प्रो. कपिल कपूर, श्री अनिल शर्मा तथा श्री मती रेणुका मिश्रा जी ने सम्मानित किया। अभिनन्दन पत्र का वाचन डॉ. रामानुज उपाध्याय ने किया। पण्डित गोविन्द प्रसाद शर्मा गोविन्दाचार्य ने सम्मान स्वीकार करने के पश्चात् अपने उद्बोधन में कहा कि अपनी वैदिक परम्परा के संरक्षण के लिये हमें अन्य सभी विषयों के साथ-साथ संस्कृत का भी अध्ययन अवश्य ही करना चाहिए। सत्र की अध्यक्षता डॉ. मीरा द्विवेदी ने की तथा इस सत्र का संचालन डॉ. रामानुज उपाध्याय ने किया। प्रो. कपिल कपूर के करकमलों से प्रतिभागियों को प्रमाण वितरित किया गया। इस संगोष्ठी में लगभग ७० प्रतिभागी उपस्थित रहे। इस प्रकार यह संगोष्ठी अपनी सम्पूर्णता को प्राप्त की।